भारत – कंबोडिया संबंध

भारत – कंबोडिया संबंध पहली शताब्दी से ही चले आ रहे हैं जब हिंदू एवं बौद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव भारत से बाहर निकलकर दक्षिण – पूर्व एशिया के विभिन्न भागों में पहुंचे थे। कंबोडिया के लोग आज ज्यादातर बौद्ध धर्मावलंबी हैं परंतु उन पर हिंदू रीति-रिवाजों, मूर्तिपूजा एवं पौराणिक कथाओं का प्रचुर प्रभाव कायम है। अंकोरवाट, अंकोर थॉम, बेयान, टा फ्रोम तथा कंबोडिया के अन्य धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों पर भव्य संरचनाओं पर हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म एवं भारतीय वास्तुशिल्प के व्यापक प्रभाव मौजूद हैं।

राजनीतिक संबंध

भारत – कंबोडिया संबंध गर्मजोशीपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण हैं। 1950 के दशक में, भारत – चीन पर अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग के साथ भारत संबद्ध था। खमेर रॉग शासन के ध्वस्त हो जाने के बाद भारत ने नई सरकार को मान्यता दी तथा 1981 में उस समय नोमपेंह में अपना दूतावास पुन: खोला जब दुनिया के ज्यादातर देशों ने कंबोडिया से किनारा कर लिया था। पेरिस शांति समझौते के साथ भारत की संबद्धता तथा 1991 में उसे अंतिम रूप देने के साथ ही इस बात को कंबोडिया के नेतृत्व द्वारा शौक से याद किया जाता है। भारत ने 1993 में यू एन टी ए सी द्वारा प्रायोजित चुनावों के संचालन के लिए सैन्य एवं असैन्य कार्मिकों की भी प्रतिबद्धता की थी। कंबोडिया में संयुक्त राष्ट्र के बारूदी सुरंग समाप्त करने की कार्रवाई के लिए मूल योगदानकर्ता देशों में भारत भी एक था। भारत सरकार ने 1986 से 1993 की अवधि के दौरान 4 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से प्रसिद्ध अंकोरवाट मंदिर का जीर्णोद्धार करने संबंधी कंबोडिया सरकार की अपील पर भी ऐसे समय में कार्रवाई की जब देशों में पूरी तरह से शांति स्थापित नहीं हुई थी।

भारत और कंबोडिया अनेक क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय मंचों पर आपस में सहयोग करते हैं। प्रधानमंत्री हुण सेन ने औपचारिक रूप से अप्रैल, 2000 में हवाना में दक्षिण शिखर बैठक में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए भारत के पक्ष में अपने देश के खुले समर्थन की घोषणा की। कंबोडिया ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर तथा द्विपक्षीय बातचीत के दौरान इस समर्थन को बार-बार दोहराया है। हमारी 'पूरब की ओर देखो नीति' तथा आसियान के संदर्भ में कंबोडिया एक महत्वपूर्ण वार्ताकार एवं एक अच्छा साथी है।

समकालीन समय में विविध क्षेत्रों जैसे कि संस्थानिक क्षमता निर्माण, मानव संसाधन विकास, तथा अवसंरचना परियोजना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना, सुरक्षा एवं रक्षा आदि में सहयोग का विस्तार हुआ है। राजनीतिक मोर्चे पर, उच्च स्तर पर नियमित रूप से दौरों का आदान – प्रदान होता है। शांति, रक्षा तथा डिमाइनिंग माड्यूल में रॉयल कंबोडिया सशस्त्र बलों के लिए वास्तविक प्रशिक्षण कैप्सूल के आयोजन, भारतीय नौसेना तथा भारतीय तटरक्षक द्वारा पोत यात्राओं एवं आई टी ई सी के तहत रक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन के साथ दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय रक्षा सहयोग जारी है।

दोनों देशों द्वारा की गई उच्च स्तरीय यात्राएं :

- पहली आसियान - भारत शिखर बैठक के लिए प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 9 से 11 अप्रैल 2002 और फिर 4 से 6 नवंबर 2002 के दौरान कंबोडिया का आधिकारिक दौरा किया। इन यात्राओं का उत्कृष्ट प्रभाव हुआ तथा द्विपक्षीय संबंध मजबूत हुए। द्विपक्षीय स्तर पर अनेक करारों पर हस्ताक्षर किए गए तथा अनेक पहलों की घोषणा की गई।

- 40 कारोबारियों सहित उच्च स्तरीय शिष्टमंडल के साथ भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील ने 13 से 18 सितंबर 2010 के दौरान कंबोडिया का छ: दिवसीय राजकीय दौरा किया। उन्होंने बेयान के मंदिरों, टा प्रोह्म तथा बेंटी स्रे, एलीफैंट टेरैस एवं सियाम रीप में अंगकोर वाट का दौरा किया। उन्होंने सियाम रीप में एम जी सी एशियाई परंपरागत वस्त्र संग्रहालय की आधारशिला भी रखी।

- प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल ने नोमपेन्ह में आयोजित 10वीं आसियान – भारत शिखर बैठक तथा 7वीं पूर्वी – एशिया शिखर बैठक में भाग लेने के लिए 18 से 20 नवंबर, 2012 के दौरान कंबोडिया का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान डा. सिंह ने 19 नवंबर को स्वर्गीय किंग फादर नोरोदोम सिहानोक को श्रद्धांजलि अर्पित की।

- भारत के उप राष्ट्रपति के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल ने 15 से 17 सितंबर, 2015 के दौरान कंबोडिया का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उप राष्ट्रपति श्री अंसारी ने प्रधानमंत्री हुन सेन के साथ आधिकारिक स्तर की वात्रा की तथा नेशनल असेंबली एवं सीनेट के अध्यक्षों से मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान दो एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए - (1) पर्यटन सहयोग का संवर्धन और (2) मेकांग - गंगा सहयोग पहल के तहत त्वरित प्रभाव वाली परियोजनाओं का कार्यान्वयन। उप राष्ट्रपति श्री अंसारी ने प्रधानमंत्री हुन सेन को भारत - कोलंबिया मैत्री विद्यालय का समापन प्रमाण पत्र भी सौंपा। वह अंगकोर वाट तथा टा प्रोह्म मंदिरों के विश्व विरासत स्थलों को देखने के लिए सियाम रीप भी गए।

- कंबोडिया के प्रधानमंत्री श्री हुन सेन ने और एक शिष्टमंडल ने 8 से 10 दिसंबर 2007 के दौरान भारत का दौरा किया। कंबोडिया के प्रधानमंत्री की राजकीय यात्रा ने कंबोडिया के साथ भारत के संबंधों को एक नई ऊर्जा प्रदान की। इस यात्रा के दौरान 7 करारों / एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए जो सजायाफ्ता व्यक्तियों के अंतरण, ऋण सहायता, रक्षा सहयोग, जल संसाधन प्रबंधन, कृषि विकास, तेल एवं गैस क्षेत्र तथा विदेश कार्यालय परामर्श से संबंधित हैं। कंबोडिया को रियायती दरों पर 35.2 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण सहायता की पेशकश की गई।

- 19 दिसंबर 2012 को आसियान - भारत वार्ता साझेदारी की 20वीं वर्षगांठ में भाग लेने के लिए कंबोडिया के प्रधानमंत्री श्री हुन सेन के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल ने भारत का दौरा किया। हुन सेन ने नई दिल्ली में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के साथ द्विपक्षीय बैठक की तथा दो विकास परियोजनाओं के लिए भारत से 57 मिलियन अमरीकी डालर के रियायती ऋण की मांग की और भारत से कंबोडिया के लिए सीधी उड़ानों पर विचार करने का आग्रह भी किया।

सहायता एवं मदद परियोजनाएं :

i. अंगकोर वाट मंदिर का जीर्णोद्धार : प्रसिद्ध अंगकोर वाट मंदिर को बचाने के लिए कंबोडिया सरकार की अपील के जवाब में भारत सरकार ने अनुकूल ढंग से कार्रवाई की तथा यह ऐसी सहायता की पेशकश करने वाला पहला देश था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनेक टीमों ने 1986 से 1993 तक काम किया। विदेश मंत्रालय (एम ई ए) द्वारा वित्त पोषित परियोजना एकल सबसे बड़ी परियोजना थी जिसकी लागत 4 मिलियन अमरीकी डालर के आसपास थी और आज भी कंबोडिया द्वारा इसकी प्रशंसा की जाती है।

ii. टा प्रोह्म मंदिर का जीर्णोद्धार : कंबोडिया के अनुरोध पर भारत सियाम द्वीप में टा प्रोह्म मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए भी राजी हुआ। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की टीम ने दिसंबर 2003 में अपना काम शुरू किया तथा एल्कोम टेक्नोलाजीज लिमिटेड के समन्वय में उन्नत 3डी लेजर स्कैनिंग तकनीकों का प्रयोग किया। टा प्रोह्म में मंदिर परिसर का जीर्णोद्धार एक प्रमुख सतत परियोजना है तथा ए एस आई टीम के कार्य की बड़े पैमाने पर प्रशंसा हो रही है। इस परियोजना का चरण 2 जुलाई 2015 में पूरा हुआ तथा परियोजना का नया चरण शीघ्र शुरू होगा।

iii. सहायता एवं मदद : वर्ष, 2002 के दौरान, भारत ने दवाएं तथा 10,000 टन चावल उपहार में दिए। भारत ने जुलाई 2003 में आम चुनाव के लिए कंबोडिया को उपहार के रूप में अमिट स्याही प्रदान किया। अगस्त 2008 में सियाम रीप में सैन्य अस्पताल को 2.31 करोड़ रुपए मूल्या की दवाएं, उपकरण एवं एंबुलेंस उपहार में दिए गए। भारत सरकार ने कंबोडिया की शाही सरकार को 2011 में बाढ़ पीड़ितों को राहत प्रदान करने के लिए 100,000 अमरीकी डालर नकद राशि दान में दी। इस मदद का उपयोग बाढ़ पीड़ितों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए खाद्य सामग्री, मच्छरदानी एवं कंबल खरीदने के लिए किया गया।

iv. आई टी ई सी प्रशिक्षण कार्यक्रम : विदेश मंत्रालय के आई टी ई सी कार्यक्रम के तहत 1981 से अब तक कंबोडिया के 1200 से अधिक नागरिकों को प्रशिक्षित किया गया है। पाठ्यक्रमों की रेंज में अंग्रेजी, कंप्यूटर अप्लीकेशन, प्रबंधन, उद्यमशीलता विकास, ग्रामीण विकास, कृषि उद्योग, श्रम प्रशासन, लेखा परीक्षा, वित्त, बैंकिंग आदि शामिल हैं। 2015-16 में कंबोडिया को 80 सिविलियन प्रशिक्षण स्लाट आवंटित किए गए हैं। रक्षा - आई टी ई सी पाठ्यक्रम के तहत कंबोडिया को 2015-16 में आर्मी पाठ्यक्रमों के लिए 12 स्लाट, एयरफोर्स पाठ्यक्रमों के लिए 4 स्लाट और नेवी पाठ्यक्रमों के लिए 4 स्लाट आवंटित किए गए हैं।

v. छात्रवृत्ति भारत में अवर स्नातक, स्नातकोत्तर एवं उच्च्तर अध्ययनों के लिए कंबोडिया के छात्रों के लिए 25 छात्रवृत्तियां - मेकांग - गंगा सहयोग कार्यक्रम (10), सामान्य सांस्कृतिक छात्रवृत्ति स्कीम (13) और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम (2) के तहत हर साल उपलब्ध हैं (17 से बढ़ाकर 2015 में 25 किया गया है)। भारत ने विशिष्ट आगंतुक कार्यक्रम के तहत दो बौद्ध भिक्षुओं / विद्वानों की आगवानी करने की भी पेशकश की है।

vi. एम जी सी एशियाई परंपरागत वस्त्र संग्रहालय : एम जी सी पहल के तहत अप्रैल 2002 में कंबोडिया की अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने सियाम रीप में ''एशियाई परांपरागत वस्त्र संग्रहालय'' स्थापित करने की घोषणा की थी। दिसंबर 2011 के अंत में संग्रहालय भवन के निर्माण का कार्य पूरा हो गया। एक भारतीय निदेशक ने जुलाई 2013 में म्यूजियम को ज्वाइन किया।

vii. भारत - कंबोडिया मैत्री विद्यालय : पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील ने 2010 में कंबोडिया की अपनी यात्रा के दौरान कांपोंग चाम प्रांत में भारत - कंबोडिया मैत्री विद्यालय के पुनर्विकास के लिए 246,000 अमरीकी डालर के डोनेशन की घोषणा की थी। यह परियोजना पूरी हो गई है तथा सितंबर 2015 में भारत के उप राष्ट्रपति की यात्रा के दौरान इसे कंबोडिया को सौंप दिया गया है।

viii. रियायती ऋण एवं अनुदान : दिसंबर 2007 में प्रधानमंत्री हुन सेन की भारत यात्रा के बाद भारत सरकार ने अब तक जल विकास तथा पारेषण लाइन परियोजनाओं के लिए कंबोडिया को 65 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण सहायता (एल ओ सी) प्रदान की है। इसके अलावा दो विकास परियोजनाओं के लिए संशोधित आई डी ई ए स्कीम के तहत दो एल ओ सी पर विचार किया जा रहा है जिसकी राशि 37 मिलियन अमरीकी डालर और 20 मिलियन अमरीकी डालर है। दिसंबर 2007 में भारत ने कंबोडिया के ग्रामीण इलाकों में पेयजल की आपूर्ति बढ़ाने के लिए 1500 अफ्रीदेव हैंड आपरेटेड पंप की आपूर्ति एवं संस्थापन के लिए 8.5 मिलियन अमरीकी डालर के सहायता अनुदान की पेशकश की। भारत सरकार ने दो परियोजनाओं अर्थात सियाम रीप घाटी - मास्टर प्लान विकास और कांपोंग स्पू प्रांत के भूजल संसाधनों के अध्ययन के लिए लगभग 3 मिलियन अमरीकी डालर का सहायता अनुदान भी प्रदान किया है।

ix. मेकांग - गंगा सहयोग (एम जी सी) पहल के तहत त्वरित प्रभाव परियोजनाएं (क्यू आई पी) : माननीय उप राष्ट्रपति की कंबोडिया यात्रा के दौरान 16 सितंबर 2015 को मेकांग - गंगा सहयोग पहल के तहत त्वरित प्रभाव वाली परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। इस यात्रा के दौरान वित्त वर्ष 2015-16 के लिए स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, कृषि और कौशल विकास से संबंधित त्वरित प्रभाव वाली पांच परियोजनाओं में से प्रत्येक के लिए 50,000 अमरीकी डालर के सहायता अनुदान की घोषणा की गई। इन परियोजनाओं का कार्यान्वयन चल रहा है।

वाणिज्यिक संबंध :

पिछले पांच वर्षों के दौरान भारत और कंबोडिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार बढ़ता रहा है। व्यापार के आंकड़ें नीचे दिए गए हैं :

(मिलियन अमरीकी डालर में)

भारत के साथ व्यापार	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	जनवरी – नवम्बर, 2015

कुल व्यापार	107.07	124.18	153.98	160.49	168.38
निर्यात	7.62	11.90	12.72	17.96	36.33
आयात	99.45	112.28	141.76	142.53	132.05
वृद्धि	**48.9 प्रतिशत**	**16 प्रतिशत**	**24 प्रतिशत**	**4.2 प्रतिशत**	**4.9 प्रतिशत अब तक**

भारत ने अगस्त 2008 से कंबोडिया को ड्यूटी फ्री टैरिफ तरजीह स्कीम प्रदान की है जिसने कंबोडियाई माल के भारत में निर्यात को प्रोत्साहित किया है। इस समय भारत से निवेश मामूली है। परंतु भारतीय कंपनियां होटल, अस्पताल, खनन एवं कृषि उद्योग जैसे क्षेत्रों में रुचि प्रदर्शित कर रही हैं तथा कंबोडिया के पक्षकारों के साथ परियोजनाओं पर चर्चा कर रही हैं। भारतीय भेषज कंपनियों के नोम पेन्ह में प्रतिनिधि कार्यालय हैं। बैंक ऑफ इंडिया द्वारा मई, 2009 में नोमपेंह में एक शाखा खोली गई है। क्रैती प्रांत में एक शुगर रिफायनरी स्थापित की गई है। अतुल आटो, बजाज जैसी कंपनियों ने अपने शो रूम स्थापित किए हैं। बजाज के अस्तबल से पल्सर मोटरसाइकिल धीरे धीरे अपना विस्तार कर रही है। टाटा फार्म ट्रैक उपकरण की बिक्री कर रहा है। 2015 के दौरान मिल्टेक, फेडरेशन ऑफ गुजरात इंडस्ट्रीज, इंडिपेंडेंट पावर प्रोड्यूसर ऑफ इंडिया के व्यापार प्रतिनिधियों तथा भारतीय निजी उद्योगों / कंपनियों से अनेक प्रतिनिधियों ने कंबोडिया का दौरा किया तथा अपने स्थानीय समकक्षों से बातचीत की। दिसंबर 2015 में फिक्की के शिष्टमंडल की कंबोडिया यात्रा के दौरान द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए कंबोडिया के वाणिज्य मंत्रालय तथा कंबोडिया के वाणिज्य चैंबर के सहयोग से एक कारोबारी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक संबंध :

दोनों देशों के बीच एक सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम (सी ई पी) है। फरवरी 2000 में प्रधानमंत्री हुन सेन की यात्रा के दौरान सी ई पी पर हस्ताक्षर किए गए थे। जून 2013 में संस्कृति मंत्रालय के सचिव की यात्रा के दौरान भारत और कंबोडिया के बीच एक नए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए गए। प्रीह सिहानोक रजा बौद्ध विश्वविद्यालय में बौद्ध एवं संस्कृति अध्ययनों पर आई सी सी आर पीठ स्थापित करने के लिए 4 जुलाई 2011 को कंबोडिया के धर्म एवं पंथ मंत्रालय के साथ एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। फरवरी, 2014 में नोमपेन्ह एवं सियाम रीप में बहुत सफल भारत महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें बुद्ध महोत्सव और रामायण महोत्सव शामिल थे। 21 जून 2015 को कंबोडिया द्वारा अंगकोर वाट मंदिर, सियाम रीप के सामने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें 1000 से अधिक कंबोडिया के नागरिकों एवं विदेशियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन कंबोडिया में भारतीय दूतावास के सहयोग से पर्यटन मंत्रालय द्वारा किया गया।

भारत को प्रीह विहीर जो एक विश्व विरासत स्थल है तथा भगवान शिव के सबसे पुराने मंदिरों तथा तीर्थस्थलों में से एक है, पर प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय समन्वय समिति (आई सी सी) का सह अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

भारत के माननीय उप राष्ट्रपति की कंबोडिया यात्रा के दौरान 16 सितंबर 2015 को भारत और कंबोडिया के बीच पर्यटन सहयोग पर एक नए एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए हैं। दोनों देशों के बीच सीधी उड़ानों के लिए प्रस्ताव पर विचार किया जा रहा है।

भारतीय समुदाय

कंबोडिया में लगभग 1500 भारतीय नागरिक रहते हैं जो विभिन्न सेक्टरों में काम कर रहे हैं। उनमें से अधिकांश कंबोडिया की राजधानी नोमपेन्ह में रहते हैं। उनमें से कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों एवं एजेंसियों के साथ काम कर रहे हैं। कुछ भारतीय कंबोडिया के कुछ मंत्रालयों में सलाहकार के रूप में काम कर रहे हैं। कुछ भारतीय डाक्टर डब्ल्यू एच ओ तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ काम कर रहे हैं। छोटे व्यापारियों का एक समूह है जो उत्तर प्रदेश से गया है तथा देहाती इलाकों में कपड़े एवं मच्छरदानियां बेचता है।

कंबोडिया में रहने वाले भारतीयों ने एक इंडियन एसोसिएशन - कंबोडिया का गठन किया है। यह संघ भारतीय दूतावास के साथ कारगर ढंग से साझेदारी कर रहा है तथा त्यौहारों एवं महत्वपूर्ण अवसरों पर समारोहों का आयोजन कर रहा है।

इसके अलावा 2012 से एक भारतीय वाणिज्य चैंबर (आई सी सी) भी स्थापित किया गया है। आई सी सी ज्यादातर भारतीय दूतावास के साथ मिलकर सेमिनारों, कारोबारी कार्यक्रमों आदि का आयोजन करता है तथा कंबोडिया में भारतीय व्यापारियों की आम समस्याओं को दूर करने के लिए काम करता है।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, नोमपेन्ह की:
http://www.indembassyphnompenh.org/
भारतीय दूतावास का फेसबुक पेज :
https://www.facebook.com/IndiaInCambodia?ref=hl
दूतावास का ट्विटर हैंडल : @indembcam

***

जनवरी, 2016